E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(4): 69-69
Received: 15-08-2021
Accepted: 19-09-2021

डॉ. मंजु चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, आर0बी0डी0 महिला महाविद्यालय, बिजनौर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. मंजु चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, आर0बी0डी0 महिला महाविद्यालय, बिजनौर, उत्तर प्रदेश, भारत

वृद्धावस्था के विविध आयाम, समस्याएँ एवं चुनौतियाँ

डॉ. मंजु चौधरी

प्रस्तावना

वृद्धावस्था का संबंध लोगों की बढ़ती उम्र से है। यह मानव विकास की ऐसी अवस्था है जिसमें व्यक्ति की इन्द्रियाँ कमजोर होने के साथ उसकी बहुत क्षमताएँ घट जाती हैं। किसी भी समाज की जनसंख्या में वृद्धों का अनुपात उसके विकास को काफी हद तक प्रभावित करता है वृद्धा होना एक जटिल और क्रमिक प्रक्रिया है जिसमें जैविक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक आयाम होता हैं। जो न तो एक दूसरे से मिलते हैं और न ही यह किसी व्यक्ति की काल क्रम आयु के अनुरूप होते हैं। आज दुनियाभर में नीति निधारकों के समक्ष एक जटिल चुनौती समाने खड़ी नजर आ रही हैं, वह है वृद्धों की संख्या सतत् वृद्धि। अवधारण : व्यवहार में उन लोगों को वृद्ध कहा जाता है जो जीवन की एक विषेष आयु को पूरा कर चुके होते है भारत में इस आयु को साठ वर्ष माना गया है। इस अवधि को पूरा कर लेने वाले व्यक्तियों को वरिष्ठ नागरिक अथवा सीनियर सिटीजन की संज्ञा दी गई है। वास्तव में वृद्धावस्था उम्र सापेक्ष अवसर व जिम्मेदारियों में नाटकीय परिवर्तन की ओर संकेत करती है। इन परिस्थितियों का विधिवत अध्ययन जेरेन्टोलोजी (Gerontonlogy) में किया जाता है। जेरेन्टोलोजी एक ऐसा सामाजिक विज्ञान है जो अपने अध्ययन वृद्धाजनों की बढ़ती उम्र के न केवल भौतिक या जैविकीय पक्ष में सम्मिलित करता है वरन् उसके साथ उन सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का विश्लेषण भी करता है जो आयु वृद्धि के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पक्षों को प्रभावित करता
है।[1]

समस्याएँ: भारत में वरिष्ठ नागरिकों अथवा वृद्धाजनों की दो श्रेणियाँ विद्यमान है : वयोवृद्ध (80 वर्ष से अधिक) तथा वृद्ध। कई कल्याणकारी एवं रियासती, स्कीमों को वरिष्ठ नागरिकों के लिये भारत में लागू किया गया है। आयकर विभागों ने 60 वर्ष की आयु प्राप्त लोगों की ही आयु का आयकर में छूट दी है तथा भारतीय रेल विभाग ने 60 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को यात्री किराया में 30 प्रतिशत की छूट दी है जो महिलाओं के लिए और भी कम उम्र पर लागू है। 80 वर्ष की उम्र पार करने वालों को पेंशन भुगतान में विशेष पेंशन भी दी जाती है तथा आयकर में भी अतिरिक्त छूट दी जाती है। इन सभी उपायों से जहां वृद्ध एवं वयोवृद्ध लोगों को आर्थिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाएँ तो सरकारी तथा गैर–सरकारी से प्राप्त होने लगी है किन्तु पारिवारिक स्तर पर व्यक्ति के लिये वृद्धावस्था एक अभिशाप होती जा रही है। उसके प्रति परिजनों की उदासीनता एवं उन्हें भार मानने की मनोवृत्ति उनके लिये कष्टदायक हो जा रही है। वृद्धाजनों की समस्या का सीधा संबंध व्यक्ति की ''वर्ष स्थिति'' से भी निर्धारित है। सामान्यतया गरीब या निम्न वर्गो में बहुत ही कम लोग 60 वर्ष की उम्र पार कर पाते है तथा स्वास्थ्य सेवाओं–सुविधाओं के अभाव में जल्दी ही मृत्यु को प्राप्त होते हैं। वृद्धाजनों की समस्याँ अधिकांश रूप से मध्यम या उच्च मध्यम भागों में विद्यमान हैं। यह अनुसंधान का विषय है कि मध्यम/नवीन मध्यम वर्गो में वृद्ध तथा वयोवृद्ध लोगों की समस्याँ के कारणों एवं परिणामों को किस प्रकार जोड़ा जाये। भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ अभी आर्थिक विकास आधुनिकीकरण हो रहा है, वृद्धों की स्थिति अधिक बिगड़ रही है। भारत में वृद्धों का प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों में अधिक रहा है। स्वास्थ्य की देखभाल के साथ उनकी आर्थिक एवं सामाजिक आवश्यकताएँ तेजी से बढ़ रही हैं। युवा निर्भरता अनुपात की तुलना में वृद्ध निर्भरता अनुपाल बढ़ रहा है। जैसे–जैसे भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत हो जा रही है वैसे–वैसे कार्य से हटने वाले वृद्धों का प्रतिशत और इनकी दूसरों पर निर्भरता बढ़ती चली जा रही हैं। लिंगानुपात स्थिति (जेंडर) का प्रभाव वयोवृद्धि की प्रक्रिया पर देखने को मिलता है। प्रायः महिलाएँ वृद्धावस्था से वयोवृद्ध (80 वर्ष से अधिक) की स्थिति पहुँचने का अवसर पुरूषों की तुलना में अधिक रखती हैं। प्रायः ऐसा देख गया है कि वयोवृद्ध पुरूषों की तुलना में वयोवृद्ध महिलाएँ किसी भी समाज में अधिक उपलब्ध है। यह शायद इस जैविकीय तथ्य का परिणाम है कि महिलाएँ जीवन प्रत्याशा में पुरूषों से कहीं आगे है।[2]

यद्यापि वृद्ध पुरूष एवं स्त्रियों की समस्याओं में अन्तर पाया जाता है परन्तु समस्याओं के क्षेत्र में लगभग समान हैं जिसमें पारिवारिक सामंजस्य व स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या के साथ आर्थिक साधनों का अभाव प्रमुख है। वृद्ध पुरूष कुछ सीमा तक अकेले रहते हैं जबकि वृद्ध महिलाएँ अपने बाल बच्चों या सम्बन्धियों के साथ रहती है। इन समस्याओं के कारण वृद्धजन मनोवैज्ञानिक सामन्जस्य नहीं बना पाते हैं और उन्हें मानसिक सुरक्षा का भय सदा बना रहता है। योगेन्द्र सिंह ने वृद्धजनों की समस्याओं को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है। पहली श्रेणी साधनविहीन लोगों की है। दूसरी श्रेणी मध्यवर्गीय लोगों की है जिन्हें भावनात्मक सुरक्षा से अधिक जीने के लिये पहल करने वालों की जरूरत है तीसरी श्रेणी समृद्ध बुजुर्गों की है जो परिवार के साथ सामन्जस्य स्थापित करे लिये राजी नहीं होती।[3] पीढ़ीगत अन्तराल में सम्बद्धता : पीढ़ीगत अन्तराल से तात्पर्य युवा एवं वृद्धों के मध्य दृष्टिकोण या समझ में अन्तर का है। पीढ़ीगत अन्तराल हमेशा रहा है किन्तु वर्तमान में यह विस्फोटक स्थिति में पहुंच गया है जीवन में मूल्य एवं प्रतिमानों में वृहद परिवर्तन हुए हैं। आज प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर पर जीवनयापन एवं व्यवहार करना चाहता हैं। इस दृष्टिकोण ने पीढ़ीगत अन्तराल को और बढ़ाया है जिसे कम कर पाना सम्भव नहीं हो पा रहा है। वर्तमान में इस अन्तर ने पारिवारिक जीवन को पूर्णतः समाप्त सा कर दिया है। बड़े बुजुर्ग अपने बच्चों की देखभाल एवं उन्हें ऊ पर उठाने हेतु हर प्रकार से त्याग करत हैं इसलिए वे स्वाभाविक रूप से उन पर अपना अधिकार समझते हैं। वे चाहते है कि बच्चे उनके निर्देशों का पालन करें।, जैसे कि उनसे वे अपेक्षा रखते हैं। लेकिन बच्चें जब बड़े हो जाते हैं तो वे उनकी सोच एवं क्रियाओं मे पूर्णतः स्वतन्त्रता चाहते हैं। परन्तु दुर्भाग्यवश ये विचार एवं क्रियाएँ बुजुर्गो की अपेक्षाओं के विपरीत होती हैं। जब बुजुर्ग प्रतिबन्ध लगाते हैं तो बच्चे उनका विद्रोह कर देते है परिणामस्वरूप परिवार टूट जाते हैं एवं समस्याएँ और विकराल रूप धारण कर लेती हैं। यद्यपि पीढ़ीगत अन्तराल एक प्रघटना है जो विभिन्न व्यक्तियों में अलग–अलग होती है जो कि प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक एवं मानसिक विकास पर निभर्रर करती है। इस वास्तविकता से कोई भी समाज, समूह या परिवार अछूता नहीं है।[4] वृद्धों की चुनौतियां : वृद्धजनों की उक्त सभी समस्याओं के समाधान एवं उनसे मुक्ति पाने को लेकर कई गंभीर तो कई सामान्य चुनौतियां सामने आती हैं। इनमें से कुछ तो वैश्विक स्तर पर सभी देशों एवं समाजों में समान रूस्प से विद्यमान हैं चाहे वे वर्तमान सूचना तकनीकी या ज्ञान क्रांतियों से गुजर रहे हों अथवा विकासशील अवस्था में हों। वृद्धजनों की सबसे बड़ी चुनौती है उनकी निजता, स्वंतत्रता एवं गतिशीलता को बदस्तूर बनाये रखने की। जीवन के इस अंतिम पड़ाव की अवस्था में सभी मानव प्राणी दूसरे परिजनों अथवा पड़ोसियों, मित्रों आदि पर शारीरिक, भौतिक, मानसिक एवं भावनात्मक रूप से निर्भर होने लगते हैं। वे अपनी निजत के लिये छटपटाने लगते हैं। उनकी भावुकता, पसंद–नापसंद या स्वास्थ सम्बन्धी समस्याओं पर कोई सुनता नहीं है और स्वयं असहाय अवस्था में हो जाते हैं तथा मानसिक रूप से टूट से जाते हैं। इस स्थिति में वे अपने इष्ट देव या ईश्वरीय सत्ता से मृत्यु मांगते हैं और वह भी उनका इच्छा से नहीं मिलती

है। सभी प्रकार सामाजिक गतिविधियों में वृद्धजनों की सहभागिता लगभग समाप्त हो जाती है और व्यक्ति अपने आप को अकेला, पृथक एवं बोरियत भरे माहौल में जीवित रहने के लिये मजबूर सा रहता है। यह अकेलापन महिलाओं को अपनी वयोवृद्ध अवस्था में अधिक महसूस करना पड़ता है। क्योंकि पुरूष वर्ग उनसे वैसे ही दूरी रखते लगता है। और महिलाएँ परिवार में उपलब्ध नहीं रहती हैं।

एक अन्य चुनौती आध्यात्मिक प्रकृति की भी वृद्धों और वयोवृद्धों के समक्ष भारत में सामने आती है। मन, बुद्धि और आत्मा के स्तर पर तो व्यक्ति कभी वृद्ध नहीं होता है केवल उसका शरीर या भौतिक स्वरूप ही झरझरित होकर निस्तेज तथा क्षीण होता जाता है इससे व्यक्ति नित्य कर्म, स्नान–शुद्धि, पूजा–पाठ आदि करने में भी अपने आप को असमर्थ पाने लगता है। वृद्धावस्था आने के उपरांत वह कभी जाती नहीं और न जीते–जी व्यक्ति को उसका कोई अंत ही दिखाई देता है। ऐसे व्यक्ति ईष्वरीय भक्ति करे तो कैसे करें। अधिकांश कर्मन्द्रियाँ एवं ज्ञानेन्द्रियाँ अपने आप कार्य करना बंद कर देती है तथा परिवार के अन्य सदस्य भी व्यक्ति को अकेला छोड़ देते है। ऐसी अवस्था में व्यक्ति न तो आध्यात्मिक ही रह पाता है और न ही स्वंय की देखभाल कर पाता है। परिजनों के समक्ष भी वृद्धजनों की कभी न समाप्त होने वाली इच्छाओं एवं महत्वाकाक्षांओं की चुनौती खड़ी होती हैं परिजन प्रायः इस पेशोपेश में रहते है कि अपने ही परिवार के बुजुर्गो को वे किस प्रकार संतुष्ट करें। इस कारण कई परिवारों में वृद्धों को अपने ही घरों से निष्कासित होकर धार्मिक स्थानों (मंदिरों) आदि में जाकर शरण लेनी पड़ती है। कुछ लोग वृद्धाश्रमों में जाकर अपना शेष जीवन व्यतीत करते हैं। वर्तमान में पश्चिमी देश तथा जापान आदि विकसित देश वृद्धजनों की बढ़ती संख्या को अनुभव कर रहें हैं। आने वाले कुछ दशकों में यहाँ बढ़ती उम्र अपने आप में एक समस्या भी बन सकती है। इस परिस्थिति को पीटरसन[5] ने ग्रे डॉन (ळतंल कूंद) की संज्ञा दी है। पीटरसन के अनुसार संसार में हर सात में से एक व्यक्ति पैंसठ वर्ष से अधिक उम्र का है। अगले दो दशकों में लगभग एक–चौथाई आबादी ऐसे वृद्धजनों की होगी। ऐसा अनुमान है कि अगले पाँच दशकों में वयोवृद्धों (80+) की संख्या अभी जो है उससे छः गुनी बढ़ जायेगी। ब्रिटेन के वृद्धजनों पर किये गये एक सर्वेक्षण[6] में पाया गया कि तुलनात्मक रूप में पेंशनभोगी वृद्धजनों की स्थिति मध्यमवर्गीय परिवारों में आरामदायक अवस्था में पायी गयी। जबकि दूसरी ओर गरीब तथा अति गरीब परिवारों में जहाँ पेंशन की सुविधाएँ नही उपलब्ध हैं, वृद्धजनों की स्थिति अति दयनीय पायी गयी। सर्वेक्षण में यह भी पाया गया कि वयोवृद्ध लोगों की स्थिति तो और भी विकट होती हैं। गंभीर बीमारी का इलाज़ कराने हेतु साधनों का अभाव होता है।

निष्कर्षः वर्तमान में भारत की सवा अरब आबादी में वृद्धजनों (80+) की जनसंख्या लगभग 10 करोड़ है जो कुल जनसंख्या का 8.33 प्रतिशत है। इसमें भी वयोवृद्ध (80+) के लोगों की संख्या पहले की तुलना में निरंतर बढ़ती जा रही है। उम्र बढ़ने के साथ–साथ व्यक्ति और समाज दोनों के लिये कई चुनौतियां एवं समस्याएँ सामने आती हैं। किन्तु इनका समाधान भारतीय परम्परागत समाज में संस्थागत रूप से निकाला गया था। व्यक्ति के सौ वर्ष के जीवन को चार आश्रमों में इस प्रकार विभाजित किया गया था कि कोई भी आश्रम व्यक्ति और समाज दोनों के लिये समस्यामूलक न बने। पचास वर्ष की उम्र के बाद व्यक्ति अपने गृहस्थ जीवन से मुक्ति लेकर वानप्रस्थी जीवनयापन की सलाह दी गई तथा 75 वर्ष के बाद तो उसे सन्यासी की भांति अपना आध्यात्मिक जीवन जीने की सलाह दी गई थी। यद्यपि वर्तमान समय में आश्रम व्यवस्था को लागू करना संभव नहीं है फिर भी कुछ हद तक पारिवारिक संस्था को मजबूत करके ही वृद्धजनों की स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं कल्याणकारी व्यवस्था को लागू किया जा सकता है।

संदर्भ

1. Giddens Anthony, Sociology: Polity Press, Cambridge, 2001
2. The Times of India, Dated 22-12-2013

3. सिंह एस.पी. एवं सिहं, एम.ए., 'वृद्धजनों की समस्याएँ एवं समाधान', आधुनिक स्तर समाजशास्त्रीय निबन्ध, विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, 178-185
4. Ram Chandra. 'Social Aspects of Generation Gap, Rajasthan Journal Sociology. 2013 Oct;5:35.
5. Peter G. Peterson: Gray Pawn: 'How than coming age wave will transfrom America and the world", Random House, New Yark, 1999.
6. Miline AE. Hat Zidimitradou, Harding T. Later Life Style: A survey by help the aged and yours manazine : Hels the aged, London, 1999.